[This question paper contains 4 printed pages.]

8697 *आपका अनुक्रमांक* ________

B.A. (Programme) / I **AS**

(T)

HINDI DISCIPLINE – Paper I

(हिन्दी अनुशासन)

(हिन्दी कविता, नाटक तथा हिन्दी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास)

(प्रवेशवर्ष 2004 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 100*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट :- प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक SOL/NCWEB/Non-Formal Cell के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में कम होंगे।

1. किन्हीं दो अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) नयना देत बताय सब हिय कौ हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी भली बुरी कहि देत ।।

× × × × ×

ओछे नर के पेट में रहै न मोटी बात।
आध सेर के पात्र में कैसे सेर समात ।।

P.T.O.

(ख) करके मीन-मेख सब ओर,
किया करें बुधवाद कठोर,
शाखामयी बुद्धि तजकर वे मूल-धर्म धरते हैं।
हम राज्य लिये मरते हैं।

(ग) किंतु जीवन-भर रहूँ फिर भी प्रवासी ही कहेंगे हाय!
मरूँगा तो चिता पर दो फूल देंगे डाल
समय चलता जाएगा निर्बाध अपनी चाल
सुनोगी तुम तो उठेगी हूक
मैं रहूँगा सामने (तसवीर में) पर मूक (10+10)

2. बिहारी **अथवा** सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित काव्यांशों के आधार पर किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) सूरदास के वात्सल्य भाव के पदों का प्रतिपाद्य बताइए।

(ख) 'अकाल और उसके बाद' कविता में जो यथार्थ बिंब उभरकर आते हैं, उन्हें स्पष्ट कीजिए।

(ग) बिहारी के दोहों में प्रतिपादित नीति-सम्बन्धी विचारों को अभिव्यक्त कीजिए।

(घ) 'मधुप गुनगुनाकर कह जाता' कविता की मूल संवेदना बताइए। (10+10)

4. किसी एक अनुच्छेद की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मैं कब कहता हूँ कि दूसरा अर्थ नहीं है ? अर्थ बहुत स्पष्ट है। वे यहाँ की हर वस्तु को विचित्र के रूप में देखते हैं और उस वैचित्र्य को यहाँ से जाकर दूसरों को दिखाना चाहते हैं। तुम, मैं, यह घर, ये पर्वत, सब उनके लिए विचित्र के उदाहरण हैं। मैं तो उनकी सूक्ष्म और समर्थ दृष्टि की प्रशंसा करता हूँ जो यहाँ वैचित्र्य नहीं, वहाँ भी विचित्र्य देख लेती है। एक कलाकार को मैंने यहाँ की धूप में अपनी छाया की अनुकृति बनाते देखा है।

अथवा

मैं जानता था तुम पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, दूसरे तुमसे क्या कहेंगे। फिर भी उस सम्बन्ध में निश्चित था कि तुम्हारे मन में कोई वैसा भाव नहीं आएगा। और मैं यह आशा लिए हुए चला गया कि एक कल ऐसा आएगा जब मैं तुमसे यह सब कह सकूँगा और तुम्हें अपने मन के द्वन्द्व का विश्वास दिला सकूँगा। ... यह नहीं सोचा कि द्वन्द्व एक ही व्यक्ति तक सीमित नहीं होता, परिवर्तन एक ही दिशा को व्याप्त नहीं करता। (10)

5. नाटकीय तत्त्वों के आधार पर 'आषाढ़ का एक दिन' का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में मातुल की भूमिका को स्पष्ट करते हुए उसका चरित्र-चित्रण कीजिए। (15)

P.T.O.

6. (क) रीतिकाल अथवा सन्त काव्य-धारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। (13)

अथवा

(ख) भारतेन्दुयुगीन कविता अथवा नई कविता की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए। (12)